3 अगर नाक न होती

इस व्यंग्य लेख द्वारा लेखक ने समाज में प्रचलित नाक से जुड़े विभिन्न मुहावरों का बड़े ही सुंदर ढंग से प्रयोग किया है। लेखक ने मानव शरीर में नाक के विशेष महत्त्व को देखते हुए, उसकी अच्छाइयों और बुराइयों का उल्लेख करने के साथ-साथ उसकी सामाजिक उपयोगिता को भी दर्शाया है।

हँसी जीवन की अनिवार्य आवश्कता है। — अब्राहम लिंकन

कितना अच्छा होता, अगर नाक न होती। नाक की चिंता में आदमी का जीना मुहाल हो गया है। नाक रखने की खातिर लोग मुकदमेबाज़ी में बरबाद हो जाते हैं, कर्ज़ लेकर भी ब्याह-शादी, भात-छोछक आदि में अंधाधुंध खर्च करते हैं। जन्म पर ही नहीं, मृत्यु पर भी दावत खिलाते हैं। पड़ोसी के बच्चों को कॉन्वेंट स्कूल में जाते देख अपने बच्चों को भी मजबूर होकर उसी में दाखिला दिलाते हैं। खरीदने की औकात न होने पर भी महँगी किश्त देकर टी०वी०, फ्रिज या कूलर आदि ले आते हैं, क्योंकि नाक नीची होने से डरते हैं। लोग अपनी धाक जमाने के लिए नाक ऊँची रखते हैं।

नाक बची रहे, इसीलिए आदमी खाकी वरदीधारियों, आयकर अधिकारियों या उनके दलालों की पत्रम्-पुष्पम् से पूजा करता है, वर्ना पकड़ा जाएगा तो फिर किसी के सामने कैसे नाक बचाएगा?

नाक के कारण आदमी को नाकों चने चबाने पड़ते हैं। नाक बड़ी जल्दी कटती है और प्रायः बिना किसी हथियार के ही कट जाती है। आदमी की अपनी नाक के साथ खानदान की नाक भी जुड़ी रहती है। कभी कोई ऐसी-वैसी बात हो जाए, लड़का घर से रूठ कर भाग जाए, लड़की लव मैरिज कर ले या कोई झूठा-मूठा इलज़ाम लग जाए, तो अपनी ही नहीं, पूरे खानदान की नाक कट जाती है।

यह भी एक मनोवैज्ञानिक सत्य है कि जिनकी नाक कट जाती है यानी जो खुद नकटे होते हैं, वे दूसरों को भी नकटा देखना चाहते हैं।

'मान न मान, मैं तेरा मेहमान' की तरह जुकाम आकर पसर जाता है और नाक में दम कर देता है। नाक तब बहुत बुरी लगती है, जब वह किसी शुभ कार्य के वक़्त अनायास छींक मार देती है। वास्तव में नाक और छींक दोनों सहेलियाँ हैं, पर ज़्यादातर लोग उन्हें अकेली ही देखना पसंद करते हैं।

एक तरफ़ लोग छींक की वजह से झींकते हैं, तो कुछ लोग नाक में फुरेरी डालकर या नसवार सूँघकर जान-बूझकर छींकते हैं।

जब आदमी का बुरा वक्त आता है या उसे किसी से कोई काम करवाना होता है, तब वह सारी हेकड़ी भूल जाता है। एक बार क्या हज़ार बार नाक रगड़ता है। जब कोई गलती हो जाती है, तब भी आदमी को अपनी नाक रगड़नी पड़ती है। जिन लोगों में बदले या ईर्ष्या की भावना होती है, वे भी मौके की तलाश में रहते हैं कि कब, कैसे किसी की नाक रगड़वा दें।

ज़िंदगी में हँसना-गाना ही नहीं, रोना भी पड़ता है। हँसने की बात छोड़िए, पर रोते समय आँखों में आँसू आते हैं, तो नाक भी उनका साथ निभाती है। बहते आँसुओं को पोंछना कोई बुरी बात नहीं, लेकिन नाक पोंछने से तो रोने का सारा मज़ा ही किरकिरा हो जाता है। करुण रस में बरबस बीभत्स रस आ टपकता है। नारी तो नाक पोंछने का काम साड़ी के पल्लू से चला सकती है, पर बेचारे उस पैंटधारी मर्द का क्या हाल होगा, जिसे जेब में रूमाल रखने का खयाल ही न रहा हो।

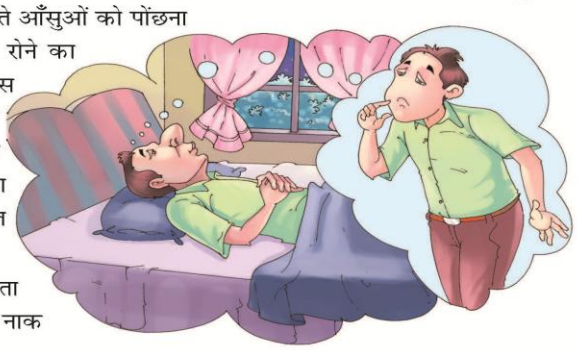

गुस्सा भी बहुत-से लोगों की नाक पर रखा रहता है। उनसे ज़रा कुछ कहा नहीं कि बिना बात नाक फुला लेते हैं।

नाक में जितनी कमियाँ या बुराइयाँ हैं, उससे ज़्यादा अच्छाइयाँ हैं इसलिए जिनकी नाक नहीं होती, वे भी नाक लगाते हैं, भले ही इस बात पर कोई दूसरा नाक-भौंह सिकोड़े तो सिकोड़ता रहे।

नाक रहना बहुत ज़रूरी है। वैसे भी और चेहरे पर भी। नाक चाहे सारस जैसी लंबी हो या चिलगोज़े जैसी छोटी, चोथ जैसी चपटी हो अथवा पकौड़े जैसी मोटी, लेकिन होनी ज़रूर चाहिए। जिसके नाक न हो, उसकी कोई सूरत देखना भी पसंद न करेगा, बल्कि देखकर डरेगा। भला बिना छज्जे के मकान का फ्रंट शोभा देता है?

नाक हो और सुंदर हो, तो सोने में सुहागा है इसीलिए कवियों ने नख-शिख-वर्णन के अंतर्गत और फुटकर रूप में भी नाक का काफ़ी वर्णन किया है। उसे सोने की हीरे-मोती जड़ी नथ, नथुनी, लौंग, बुलाक आदि से सजाया है।

मध्यकालीन काव्य में नायिकाओं की नाक के लिए बहुत-सी उपमाएँ दी गई हैं। नाक को चंपे की कली, तिल के सुगंधित फूल से निर्मित और तलवार की धार से बढ़कर बताया गया है। यहाँ तक तो ठीक है, पर

एक बात समझ में नहीं आती कि अधिकांश कवियों ने नाक की उपमा तोते की चोंच से क्यों दी है? हम क्लास में जब किसी सुंदरी-सुमुखी नायिका की नाक की उपमा तोते की चोंच से पढ़ाते हैं, तो हमारे हाथ के तोते उड़ जाते हैं, मन में अजीब से भाव उमड़ आते हैं। सोचने की बात है कि ऐसी नाक किसी चेहरे पर चार चाँद लगाएगी या दीवार में ठुके हुए उलटे हुक-सी नज़र आएगी?

उपन्यास-कहानियों में सुंदर नाक को 'सुतवाँ' नाक कहा जाता है। ऊँची और दीर्घ नाक की तुलना कुल्हाड़ी से की जाती है। छोटी और सुकोमल नासिका को भेंड़ की-सी नाक की संज्ञा दी जाती है।

नाक शरीर का सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण अंग है। अगर चित्त लेटकर देखें, तो यह बात अपने आप सिद्ध हो जाएगी कि हाथ, पाँव, मुँह, कान, आँख आदि में सबसे ऊँचा स्थान नाक को ही प्राप्त है। अगर आँख आ जाए या चली जाए, तो ऐसी स्थिति में काला चश्मा लगाया जा सकता है। कान कट-फट जाए, तो उसे कंटोपा पहनकर छिपाया जा सकता है, लेकिन अगर कहीं नाक कट जाए, तो चेहरा रेगिस्तान की तरह एकदम सपाट अथवा चक्की का-सा पाट नज़र आएगा। हालाँकि प्लास्टिक सर्जरी द्वारा उसका इलाज़ हो सकता है, परंतु वह इतना महँगा पड़ेगा कि बड़े-से-बड़े नक्कूशाह को भी नानी याद आ जाएगी।

कुछ लोग नाक पर मक्खी तक नहीं बैठने देते। बहुत-से ऐसे लोग भी होते हैं कि जब वे कुंभकर्ण की भाँति सोते हैं, तो उनकी नाक नक्कारे-सी बजती है। कई लोगों की नाक के नीचे कुछ भी होता रहे, पर वे दीन-दुनिया से बेखबर बने रहते हैं। ऐसे लोगों की भी कमी नहीं जो दूसरों को नाक नचाते हैं। किसी भी नाक पर दे मारना भी कई लोग अपनी शान समझते हैं। कुछ लोग सचमुच नाकदार होते नहीं, पर बनते हैं। खैर!! जो भी हो, नाक रहने में भी भलाई है। नाक न होती, तो खुशबू और बदबू में क्या अंतर रह जाता? नाक के अभाव में चंदन, कपूर, इत्र-फुलेल आदि सब बेमानी हो जाते। असली हींग और देसी घी की पहचान कैसे होती?

आँखें हमेशा से लड़ती आई हैं। लड़ना-लड़ाना उनका स्वभाव है। किसी की आँखें किसी से लड़ें या मिलकर चार हो जाएँ, तो कोई हर्ज़ नहीं, मगर वे आपस में ही लड़ बैठें, यह कहाँ तक ठीक है? नाक ही तो है, जो बीच में पड़कर उन्हें लड़ने से रोकती है, अन्यथा आदमी उनके परस्पर लड़ने से आँखों से ही हाथ धो बैठता।

वैसे भी अब लोगों की नज़रों में फ़र्क आता जा रहा है। कहीं नज़र उठ रही है, कहीं गिर रही है, कहीं गड़ रही है और इसी के साथ चश्मों की ज़रूरत भी बढ़ रही है। चश्मा चाहे नज़र बढ़ाने का हो या नज़रें चुराने का, चाहे धूप से बचाने का हो, चाहे किसी रूप को छिपकर निहारने का, अगर नाक न होती, तो बताइए, यह चश्मा कहाँ ठहरता? नाक ही तो चश्मे का अच्छा-खासा स्टैंड है।

नाक के कारण ही सीता का हरण और रावण का मरण हुआ। अगर सूर्पनखा की नाक न कटती, तो 'रामायण' की रचना कैसे होती? 'महाभारत' का आधार भी द्रौपदी की नाक ही थी, जो अत्यंत खतरनाक सिद्ध हुई।

सिर और मुँह के बीच, नाक कटलेट की भाँति रहती है, पर हकीकत यह है कि इसे खाने की नौबत नहीं आती। लोग जब चाहे किसी का सिर खा सकते हैं, दिमाग और खोपड़ी चाट सकते हैं, पर नाक के साथ ऐसा कुछ नहीं हो सकता। अच्छे-अच्छे चटोरों को भी यहाँ मुँह की खानी पड़ती है।

नाक के और भी बहुत से फ़ायदे हैं। उच्छ्वास और नि:श्वास का कार्य मुँह से किया जा सकता है, पर प्राणों का आधार श्वास है और श्वास लेने का साधन नाक ही है। नाक की गड़बड़ी से आदमी नकियाने लगता है, वह नकसुरा कहलाता है।

नाक हीटर का काम भी करती है। बाहर की ठंडी हवा को गरम करके अंदर पहुँचाती है और ठंड लगने से बचाती है। आजकल पर्यावरण-प्रदूषण ज़ोरों पर है। वातावरण में व्याप्त प्रदूषण को फेफड़ों तक जाने से नाक ही रोकती है। नाक में उगे बाल छन्ने और झाड़ू का काम करते हैं।

बहुत-से लोग मतलब साधने के लिए अपने बॉस की नाक के बाल बन जाते हैं।

जिस प्रकार सिंगट्टा दिखाने, आँख दिखाने, दाँत दिखाने, पीठ दिखाने आदि के मुहावरे प्रचलित हैं, दुर्भाग्य कहें या सौभाग्य, नाक दिखाने का कोई मुहावरा नहीं है। हाँ, यदि नाक बीमार पड़ जाए, तो कोई कितना ही नक्कू क्यों न हो, उसे भी मजबूर होकर नाक दिखाने के लिए किसी नाक वाले डॉक्टर की शरण में भागना पड़ता है।

–गोपाल बाबू शर्मा

–लेखक परिचय–

अपनी रचनाओं द्वारा लेखक गोपाल बाबू शर्मा ने हिंदी साहित्य की अभिवृद्धि में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। इनकी भाषा प्रसंग के अनुरूप सरल, सरस और प्रवाहपूर्ण होती है। इन्होंने 'चलते-चलते', 'सब चलता है लोकतंत्र में', 'लोक जीवन में नारी विमर्श', 'सास बिना सब सूना' जैसी लोकप्रिय कृतियों की रचना की है।

अभ्यास

शब्दार्थ

मुहाल-कठिन; बरबाद-नष्ट; कर्ज़-उधार; भात-विवाह के अवसर पर मामा की ओर से कन्या को दी जाने वाली भेंट; छोछक-बहन की संतान को जन्म के अवसर पर भाई (मामा) की ओर से दी जाने वाली भेंट; औकात-हैसियत, सामर्थ्य; पत्रम्-पुष्पम्-फूल पत्ते, तुच्छ-सी लगने वाली भेंट; नसवार-सुँघनी; खानदान-परिवार; इलज़ाम-दोष; हेकड़ी-अकड़; बरबस-ज़बरदस्ती; चोथ-गाय, भैंस का गोबर; उपमा देना-तुलना करना; हुक-सी-कील के समान; फ्रंट-आगे का भाग;